प्रधानमंत्री जी को लिखित में भेज दूंगा। मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूं कि मनोवृत्ति की बात दो पक्षीय है। विजय जी, उनकी मनोवृत्ति को हमें समझने की जरूरत है, लेकिन हमें अपनी मनोवृत्ति को भी बदलना पड़ेगा। यह नहीं कि केवल वे बदलें और आप वैसे के वैसे रहें। यह बहुत आवश्यक है कि हम चर्चा शुरू करें, मैं यह नहीं कह रहा हूं और मैंने आपसे तभी कहा था कि बहुत बड़ी गलती की है कि आप लाहौर गए और आपने आगरा शिखर सम्मेलन बुलाया, लेकिन ऐसे आप शिखर तक नहीं पहुंच पाओगे। जब तक कि शेरपा बोझ को अपने कंधे पर उठाकर आपके पहले आगे न जाये। ये विदेश सेवा के लोग कर क्या रहे हैं, अगर अंडर सैक्रेट्री का काम प्रधानमंत्री जी करने लगें? यह क्या अजीबोगरीब परिस्थिति है कि ड्राफ्ट्स के साथ हमारे प्रधानमंत्री जा रहे हैं और कह रहे हैं कि क्रास को निकाल दो, बोर्डर लगा दो। यह क्या प्रधानमंत्री का काम है? यह क्या विदेश मंत्री का काम है?*...*(व्यवधान)* महोदय, ये मेरा अंतिम वाक्य है।

आप सुदृढ़ रहिये कि हां, बेशक हम चर्चा शुरू करेंगे, लेकिन जो वार्तालाप नीचे के स्तर पर, निचले स्तर पर शुरू होगा, वह निर्विघ्न और निर्व्यवधान रहेगा।

[अनुवाद]

यह निर्व्यवधान होनी चाहिए।

[हिन्दी]

जब तक कि आपकी बातचीत जारी न रहे, चाहे जो भी आतंक हो, जो भी हो। जिस तरह से अमेरिका और वियतनाम के बीच में होटल मैजेस्टिक, पेरिस में हर गुरूवार के दिन 1969 से लेकर 1975 तक, जब तक कि उन्होंने समझौता किया, उनकी बातचीत जारी रही, जबकि वे एक दूसरे पर बम फेंक रहे थे। जिस तरह से नोर्थ कोरिया और साउथ कोरिया के बीच में पानमुनजोम में 1953 से लेकर आज तक 50 वर्ष से बातचीत हो रही है, क्योंकि जो निगोशिएटिंग टेबल है, वह सीमा पर ही है। नोर्थ कोरिया को नोर्थ कोरिया नहीं छोड़ना पड़ता हैं, साउथ कोरिया को साउथ कोरिया नहीं छोड़ना पड़ता है। वे एक दूसरे के साथ बातचीत करते हैं। इस प्रकार का वार्तालाप हो, तब तो हम सफलता पाएंगे। लेकिन बदली करवटों के साथ हम सो भी नहीं सकते हैं और वे बेचारे भी चैन से नहीं सो सकते हैं। इसके लिए अनुरोध बस यह है कि यदि आप वाकई पाकिस्तान के साथ दोस्ती चाहते हैं तो उस दोस्ती के लिए आप वार्तालाप शुरू कीजिए और मत भूलिये कि यदि पार्टीशन न होता तो वे हमारे सहनागरिक होते। मैं गर्व से कहता हूं कि मैं खुर्शीद कसूरी को पिछले 42 साल से जानता हूं जब मैं लाहौर जाता हूं तो वे ही मेरे मेजबान होते हैं। मैं क्यों न आज कहूं कि चूंकि मैं उस व्यक्ति को 42 साल से जानता हूं, इसलिए मैं जानता हूं कि उस व्यक्ति के साथ बातचीत हो सकती है और आप उसका मजाक उड़ा रहे हैं।

*अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार कार्यवाही-वृत्तान्त से निकाल दिया गया।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय: दीर्घा में बैठे किसी भी अधिकारी के बारे में किया गया उल्लेख कार्यवाही से निकाल दिया जायेगा।

अपराह्न 5.47 बजे

प्रधान मंत्री द्वारा वक्तव्य

भू-तुल्य कालिक उपग्रह प्रमोचक राकेट (जी.एस.एल.वी.) की सफल परीक्षण उड़ान

[हिन्दी]

प्रधानमंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी):* अध्यक्ष महोदय मैं सदन को एक खुशखबरी देना चाहता हूं।

[अनुवाद]

महोदय, मैं सदन को कुछ मिनट पहले श्री हरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र से देश में ही निर्मित भू-तुल्यकाली उपग्रह प्रमोचक राकेट (जी.एस.एल.वी.) की दूसरी सफल परीक्षण उड़ान की सूचना देना चाहता हूं। प्रायोगिक संचार उपग्रह, जी.एस.ए.टी-2 को उचित रीति से भू-तुल्यकाली कक्षा में स्थानांतरित किया गया।

सभी भारतीयों के लिए यह गर्व की बात है। मुझे विश्वास है कि अंतरिक्ष के क्षेत्र में एक अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए यह सदन भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, इसकी सहायक अनुसंधान प्रयोगशालाओं और औद्योगिक इकाईयों के कार्मिकों को बधाई देने में मेरा साथ देगा।

अंतरिक्ष विभाग के राज्यमंत्री इस बारे में सभा में एक सम्पूर्ण वक्तव्य बाद में देंगे।

---

*[ग्रंथालय में भी रखा गया। देखिए संख्या एल.टी. 7716/2003]